*अध्ययन सामग्री
विषय- हिन्दी
स्नातक प्रतिष्ठा(खण्ड-3)
प्रश्न पत्र- षष्ठ
यमक अलंकार का लक्षण एवं उदाहरण
पदनाम- डॉ स्मिता जैन
एसोसिएट प्रोफेसर
हिंदी विभाग
एच डी जैन कॉलेज, आरा* 23:15

Scanned with CamScanner

(1) यमक —

भिन्नार्थक अथवा निरर्थक स्वर-व्यंजन समुदाय की आवृत्ति को यमक कहते हैं।

'लाटानुप्रास' में शब्द और अर्थ — दोनों एक रहते हैं। यमक में केवल शब्दों में ही एकात्मता रहती है, अर्थों का सर्वथा भिन्न रहना आवश्यक है। बिहारी का यह दोहा उदाहरण रूप में लिया जा सकता है —

"वर जीते सर मैन के, ऐसे देखे मैं न
हरिनी के नैनान ते, हरि नीके ये नैन।।

'मैन' का अर्थ है मदन (काम) और दूसरे 'मैं न' का अर्थ है मैं न अर्थात् मैंने नहीं। इस तरह उत्तरार्ध में पहले 'हरिनी के' का अर्थ है 'मृगी के' और दूसरे 'हरि नीके' का अर्थ है हरि (कृष्ण का सम्बोधन) नीके (अच्छे)

अतः लक्षण की संघटना ऐसी है कि 'मैन', 'मैं न' तथा हरिनी के, हरि नीके' दोनों में स्वर-व्यंजन समुदाय की क्रमशः आवृत्ति है और सभी सार्थक हैं, पर सबके अर्थ भिन्न-भिन्न हैं।

इस उदाहरण में केवल सार्थक वर्णों का सन्निवेश है।

Scanned with CamScanner

"कैकी रव की नूपुर-ध्वनि सुन
जगती-जगती की मूक प्यास।"

यहाँ 'जगती' शब्द की आवृत्ति में यमक है। प्रथम 'जगती' क्रिया है और द्वितीय 'जगती' पृथ्वी का पर्याय। स्वरव्यंजन समुदाय की आवृत्ति तो है, पर दोनों शब्द भिन्नार्थक हैं।

<u>दोनों की निरर्थकता का उदाहरण</u> —

"सुमन चारु यही न अशोक से,
सुमन-चाप-प्रदीपक हैं नये,
मधु-सुशोभित और रसाल भी,
न मद-कारक हैं न रसाल ही।"

प्रथम पद के 'सुमनचा' की दूसरे पाद में और तीसरे पाद के 'रसाल' की चौथे पाद में आवृत्ति है। यहाँ दोनों जगह 'सुमनचा', 'सुमनचा' में यमक है, पर दोनों ही दो शब्दों के खण्डभाग से निष्पन्न होते हैं। अतः दोनों निरर्थक हैं।